



MS. BINAPANI MOHANTY

Ms. Binapani Mohanty is a renowned litterateur from Odisha.

2. Born on 11th November, 1934, Ms. Mohanty received her Master's degree in Economics in the year 1959 from Utkal University and joined the Odisha Education Service. She was awarded the D.Litt. (Honoris Causa) in Odia literature by Ravenshaw University, Cuttack in the year 2015. She began her professional career as a lecturer in Economics. As an acclaimed and respected figure in Odia literature, she is the founder and present President of the Odisha Lekhika Sansad, an organisation of Odia women writers.

3. Ms. Mohanty started her literary pursuits from 1956. Her literary career started as a poet and she later established herself as a short story writer. She has been active in Odia literature for more than half a century and her writings have been published in almost all the leading magazines, newspapers and different journals of Odisha. She has glorified women in her stories as the symbol of sacrifice and love. She has made a noteworthy contribution in keeping traditional values and idealism alive in modern Odia fiction. Her stories are filled with love, compassion, tears and camaraderie and they touch a chord in the heart of the reader. As an Odia fiction writer of eminence, she has three novels, thirty-four collections of short stories, one poetry collection and also a collection of one-act plays to her credit. Some of her stories have been translated into English, Hindi, Bengali, Malayalam, Kannad, Telugu, Urdu and Russian languages. She has also translated five books from English and Bengali into Odia as assignments from the Central Sahitya Akademi and Raduga Publishers, Moscow. She has inspired women writers of the state to shape their literary career.

4. Ms. Mohanty's short story (Patadei) has been telecast in the national programme called `Kashmakas' in 1987. A film made on her story " Andhakarara Chhai" entitled "Bhanga Silata" has been highly appreciated at the national level through national telecast. Some of her one-act plays have been staged and broadcast by All India Radio, Cuttack and telecast through Bhubaneswar Doordarshan Kendra. She is a member of different cultural organisations of Odisha. She attended the All India Women Winter Conference held at Nainital in 1976 as a delegate and presented a paper. She attended the valedictory session of International Women's Year under the chairmanship of Late Smt. Indira Gandhi in New Delhi the same year, as the representative of the Government of Odisha. She represented Odia literature in the East Zonal Writers' Meet held at Gangtok, Sikkim in 1992 organised by Kendra Sahitya Akademi. She represented Odia literature in All India Writers' Meet held by Suravi, Kerala in 1994. She led a delegation to Assam Sahitya Sabha in 1995.

5. Ms. Mohanty is the recipient of several prestigious awards and honours. She has been awarded the Central Sahitya Akademi Award in 1990 for her outstanding contribution to Indian literature. She has won numerous awards including State Sahitya Akademi Award in 1968, Visuba Award in 2000, Sahitya Bharati Award in 2002, Sarala IMFA Award in 2010 and Kadambini Award in 2010. She has also been honoured with numerous other literary awards in Odisha.





सुश्री बीणापाणि महान्ति

सुश्री बीणापाणि महान्ति ओडिशा की एक जानी–मानी साहित्यकार हैं।

2. सुश्री महान्ति का जन्म 11 नवम्बर, 1934 को हुआ था। उन्होंने वर्ष 1959 में उत्कल विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में अपनी स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की थी और ओडिशा शिक्षा सेवा में कार्य ग्रहण किया था। उन्हें वर्ष 2015 में, रावेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक द्वारा उड़िया साहित्य में डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की गई थी। उन्होंने, अर्थशास्त्र के व्याख्याता के रूप में अपना अध्यापन कार्य शुरू किया। उड़िया साहित्य की एक लब्धप्रतिष्ठ और सम्मानीय शख्सीयत के रूप में, वह उड़िया लेखिकाओं के एक संगठन ओडिशा लेखिका संसद की संस्थापक और अध्यक्ष हैं।

3. सुश्री महान्ति ने वर्ष 1956 से अपनी साहित्यिक यात्रा शुरू की। उन्होंने एक कवि के रूप में शुरूआत की और बाद में लघु कहानियों की लेखिका के रूप में स्वयं को स्थापित किया। वह उड़िया साहित्य में आधी सदी से भी अधिक समय से सक्रिय रही हैं तथा उनकी रचनाएं ओडिशा की लगभग सभी अग्रणी पत्रिकाओं/समाचार पत्रों और विभिन्न जर्नलों में प्रकाशित हुईं। उन्होंने अपनी कहानियों में महिलाओं का त्याग और प्रेम की प्रतिमूर्ति के रूप में गौरव गान किया है। उन्होंने आधुनिक उड़िया उपन्यास में परंपरागत मूल्यों और आदर्शवाद को जीवंत रखते हुए उल्लेखनीय योगदान किया है। उनकी कहानियां प्रेम, करुणा, आंसू और अपनत्व भाव से ओत–प्रोत हैं और वह पाठक के अंतर्मन को छूती हैं। उड़िया उपन्यास की प्रख्यात लेखिका के रूप में उनके संग्रह में तीन उपन्यास, चौंतीस लघु कहानियों का संग्रह और एक कविता संग्रह है, साथ ही उन्होंने एकांकी –नाटकों का एक संग्रह भी प्रकाशित किया है। उनकी कुछ कहानियों का अनुवाद अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली, मलयालम, कन्नड़, तेलुगू, उर्दू और रूसी भाषा में किया गया है। उन्होंने केन्द्रीय साहित्य अकादमी और रादुगा पब्लिशर्स, मॉस्को द्वारा सौंपे गए दायित्व के रूप में पांच पुस्तकों का अंग्रेजी और बंगाली भाषा से उड़िया में अनुवाद भी किया है। उन्होंने राज्य की महिला लेखिकाओं को उनके साहित्यिक जीवनवृत्ति को निखारने के लिए प्रेरित किया है।

4. सुश्री महान्ति की लघु कहानी (पटादेई) को 1987 में 'कश्मकश' नाम से राष्ट्रीय कार्यक्रम में प्रसारित किया गया। उनकी कहानी "अन्धकरारा छाएं" पर "भंग सिलाता" के नाम से एक फिल्म बनी थी जिसे राष्ट्रीय दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित किया गया। इसे राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सराहा गया। उनके कुछ एकांकी नाटकों का मंचन किया गया और ऑल इंडिया रेडियो, कटक द्वारा प्रसारित किया गया और भुवनेश्वर दूरदर्शन केन्द्र से भी प्रसारित किया गया। वह ओडिशा के विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों की सदस्य हैं। उन्होंने वर्ष 1976 में नैनीताल में आयोजित ऑल इंडिया वूमन विंटर कांफ्रेन्स में एक प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया और एक पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उसी वर्ष नई दिल्ली में स्व. इंदिरा गांधी की अध्यक्षता में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के समापन सत्र में ओडिशा सरकार की प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। उन्होंने केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1992 में गंगटोक सिक्किम में आयोजित पूर्वी अंचल के लेखकों की बैठक में उड़िया साहित्य का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने वर्ष 1994 में सुरावी, केरल द्वारा आयोजित अखिल भारतीय लेखकों की सभा में उड़िया साहित्य का प्रतिनिधित्व किया। वर्ष 1995 में उन्होंने असम साहित्य सभा में भाग लेने वाले शिष्टमंडल का नेतृत्व किया।

5. सुश्री महान्ति को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। भारतीय साहित्य में असाधारण योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1990 में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें 1968 में राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार, वर्ष 2000 में विसूबा पुरस्कार, वर्ष 2002 में साहित्य भारती पुरस्कार, वर्ष 2010 में सरला आईएमएफए पुरस्कार तथा वर्ष 2010 में ही कादम्बिनी पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें ओडिशा के अनेक साहित्यिक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।